ईश्वर के नाम से अत्यंत कृपाशील और दयावान है

शान्ति मार्ग

पैदा करने वाले के वुजूद

भाइयो! अगर कोई व्यक्ति आपसे कहे कि बाजार में एक दुकान ऐसी है, जिसका काई दुकानदार नही है, न कोई उसमें माल लानेवाला है न बेचनेवाला और न कोई रखवाली करता है। दुकान आप-से-आप चल रही है, आप-से-आप उसमें माल आ जाता है आप-से-आप खरीदारों के हाथ बिक भी जाता है, तो क्या आप उस व्यक्ति की बात मान लेंगे? क्या आप स्वीकार कर लेगे कि किसी दुकान में माल लाने वाले के बिना आप-से-आप माल आ भी सकता है? माल बेचने वाले के बिना आप-से-आप बिक भी सकता है? हिफाजत करने वाले के बिना फिर आप-से-आप चोरी और लूट से बचा भी रह सकता है? अपने दिल से पूछिये, ऐसी बात आप कभी मान सकते है? जिसकी अक्ल और सूझबूझ ठिकाने हो क्या उसके दिमाग मेे कभी आ सकती है कि कोई दुकान दुनिया में ऐसी भी होगी?

कल्पना कीजिए एक आदमी आप से कहता है कि इस शहर में एक कारखाना है जिसका न कोई मालिक है, न इंजीनियर, न मिस्त्री, सारा कारखाना आप-से-आप कायम हो गया है। सारी मशीनें खुद ही बन गयी है। खुद ही सारे पुर्जे अपनी-अपनी जगह पर लग भी गए, खुद ही सभी मशींने चल भी रही है और खुद ही उनमें से अजीब-अजीब चीजें बन-बन कर निकल भी रही है। सच बताइयें जो आदमी आप से यह बात कहेगा, क्या आप हैरत से उसका मुंह न देखने लगेंगे? क्या आपको शक न होगा कि कही इसका दिमाग खराब तो नही हो गया है? क्या एक पागल के सिवा ऐसी गलत बात कोई कह सकता है?

दूर की मिसालों को जानने दीजिए, यह बिजली का बल्व जो आपके सामने जल रहा है, क्या किसी के कहने से आप यह मान सकते है कि रोशनी इस बल्व में आप-से-आप पैदा हो जाती है? यह कुर्सी जो आपके सामने रखी है, क्या किसी बड़े-से-बड़े घुरन्धर दार्शनिक (फल्सफी) के कहने से भी आप मान सकते है कि यह आप-से-आप बन गयी है? ये कपड़े जो आप पहने हुए है, क्या दुनिया कि किसी बड़े-से-बड़े आलिम और पंडित के कहने से भी आप यह तस्लीम करने के लिए तैयार हो जाएंगे कि उनको किसी ने बुना नहीं है, ये आप-से-आप ही बुन गये है? ये घर जो आप के सामने खड़े है, यदि तमाम दुनिया की युनिवर्सिटियों के प्रोफेसर मिलकर भी आपकों यकीन दिलाना चाहे कि इन घरों को किसी ने नहीं बनाया है बल्कि यह आप-से-आप बन गए है, तो क्या उनकें यकीन दिलाने से आपको ऐसी गलत बात पर यकीन आ जाएगा?

ये कुछ मिसालें तो आप के सामने की है, रात-दिन जिन चीजों को आप देखते है, उन्हीं में से कुछ को मैने बयान किया है। सब विचार कीजिए, एक मामूली दुकान के बारे में जब आपकी अक्ल यह नही मान सकती कि वह किसी कायम करनेवाले के बिना कायम हो गयी और किसी चलाने वाले के बिना चल रही है, तो इतनी बड़ी सृष्टि के बारे में आपकी अक्ल इस पर किस प्रकार यकीन कर सकते है कि वह किसी बनाने वाले के बिना बन गई है और किसी चलाने वाले के बिना चल रही है?

जब एक मामूली से कारखाने के बारे में आप यह मानने के लिए तैयार नहीं हो सकते है कि वह किसी बनाने वाले के बिना बन जाएगा और किसी चलाने वाले के बिना चलता रहेगा, तो धरती और आकाश का यह जवरदस्त कारखाना जो आपके सामने चल रहा है, जिसमें चांद, सूरज और बड़े-बड़े नक्षत्र (सय्यारें) घड़ी के पुर्जो के समान चल रहे है, जिन में समुद्रों से भाप उठती है, भापों से बादल बनते है, बादलों को हवाये उड़ा कर धरती के कोने-कोने में फैलाती है, फिर उनकों ठीक समय पर ठंडक पहुंचा कर दोबारा भाप से पानी बनाया जाता है, फिर वह पानी वारिश की बूंदों के रूप में धरती पर गिराया जाता है, फिर उस वारिश की वजह से मरी हुई धरती के पेट से तरह-तरह के लहलहाते हुए पेड़-पौधे निकाले जाते है, किस्म-किस्म के अनाज रंग-बिरंगे फूल और तरह-तरह के फल पैदा किए जाते है। इस कारखाने के बारे में आप यह कैसे मान सकते है कि यह सबकुछ किसी बनाने वाले के बिना आप-से-आप बन गया और किसी चलाने वाले के बिना आप-से-आप चल रहा है? एक जरा सी कुर्सी, एक गजभर कपड़े, एक छोटी सी दीवार के बारे में कोई कह दे कि ये चीजें खुद बनी है तो आप फौरन फैसला कर देंगे कि उसका दिमाग चल गया है,

फिर भला उस व्यक्ति के दिमाग के खराब होने मे क्या शक हो सकता है, जो कहता है कि धरती आप-से-आप बन गई, जानवर आप-से-आप पैदा हो गए, इन्सान जैसी अद्‌भुत चीज आप-से-आप बनकर खड़ी हो गयी?

आदमी का शरीर जिन पदार्थो से मिलकर बना है, उन सबको साइंसदानों ने अलग-अलग करके देखा तो मालूम हुआ कि कुछ लोहा है और कुछ कोयला, कुछ गन्दक, कुछ फासफोरस, कुछ कैल्शियम, कुछ नमक, कुछ गैसे और बस ऐसी ही कुछ और चीजें, है , जिनकी पूरी कीमत कुछ रुपयों से अधिक नहीं है। ये चीजें जितने-जितने वनज के साथ आदमी के शरीर में शामिल है उतने ही वजन के साथ ले लीजिए और जिस प्रकार जो चाहे मिलाकर देख लीजिए, आदमी किसी तरकीब से न बन सकेगा। फिर किस प्रकार आपकी अक्ल यह मान सकती है कि उन कुछ बेजान चीजों से देखता, सुनता, बोलता, चलता-तो इंसान वह इंसान जो जहाज और रेडियों बनाता है, किसी कारीगर की हिकमत और सूझबूझ के बिना आप-से-आप बन जाता है?

कभी आपने सोचा कि मां के पेट की छोटी सी फैक्ट्री में किस प्रकार आदमी तैयार होता है ? बाप की कारसाजी का इसमें कोई हाथ नही, मां की हिकमत का इसमें कोई काम नहीं। एक छोटी से थैली मेे दो कीड़े जो सूक्ष्म-दर्शक यन्ंत्र (डपबतवेबवचम) के बिना देखे तक नहीं जा सकते, न जाने कब आपस में मिल जाते है। मां के खून ही से उनको खुराक पहंुचाना शुरू होती है, वही लोहा, गन्धक, फासफोरस बगैरा सब चीजें जिनकों मैने ऊपर बयान किया, एक खास बजन और एक खास अनुपात के साथ वही जमा होकर लोथड़ा बनती है, फिर उस लोथड़े में जहां आंखे बननी चाहिए वही आंखे बनती है, जहां कान बनने चाहिए वही कान बनते है, जहां दिमाग बनना चाहिए वहा दिमाग बनता है, जहां दिल बनना चाहिए वहा दिल बनता है, हड्डी अपनी जगह पर, मांस अपनी जगह पर रंगे अपनी जगह पर, यानी एक-एक पुर्जा अपनी-अपनी जगह पर ठीक बैठता है। फिर उसमें जान पड़ती है, देखने की ताकत, सुनने की ताकत, चखने और सूगंने की ताकत, बोलने की ताकत, सोचने और समझनें की ताकत, और कितनी ही अनगिनत ताकतें उनमें भर जाती है। इस प्रकार जब इंसान मुकम्मल हो जाता है तो पेट की बड़ी-छोटी सी फैक्ट्री, जहां नौ महीने तक वह बन रहा था, खुद जोर लगाकर उसे बाहर ठकेल देती है और दुनिया यह देखकर हैरान रह जाती है कि इस फैक्ट्री में एक ही तरीके से लाखों इंसान रोज बनकर निकल रहे है, लेकिन हर एक का नमूना भिन्न और अलग है, शक्ल अलग, रंग अलग, आवाज, ताकतें और सलाहितें अलग, स्वभाव और विचार अलग, आचार और खूविया अलग, यानी एक ही पेट से निकले हुए दो सगे भाई तक एक-दूसरे से नहीं मिलते। यह ऐसा चमत्कार है जिसे देखकर अक्ल दंग रह जाती है। इस चमत्कार को देखकर भी जो इंसान यह कहता है कि यह काम किसी जबरदस्त हिकमत, सूझबूझ और जबरदस्त ताकत वाले और जवरदस्त ज्ञान रखने वाले और अनुपम कमालात (निपुणताऐ) रखने वाले ईश्वर के बिना हो रहा है या हो सकता है, निष्चिय ही उनका दिमाग ठीक नहीं है। उसको अक्लमंद समझना अक्ल का अपमान करना है। कम-से-कम में तो ऐसे व्यक्ति को इस योग्य नहीं समझता है कि किसी बौद्धिक और माकूल मसलें पर उसमें बातचीत करूं।

ईश्वर एक है

अच्छा अब थोड़ा और आगे चलिए। आप में से हर व्यक्ति की अक्ल इस बात की गवाही देगी की दुनिया में कोई काम भी चाहे छोटा हो या बड़ा, कभी सुव्यवस्थित और नियमित रूप से और वाकायदगी के साथ नहीं चल सकता, जब तक कि कोई एक व्यक्ति उसका जिम्मेदार न हो। एक स्कूल के दो हैड मास्टर, एक विभाग के दो डायरेक्टर, एक फौज दो कमाण्डर, एक हुकूमत के दो बादशाहें कभी आपने सुने है? और यदि कही ऐसा हो तो क्या आप समझते है कि एक दिन के लिए भी प्रबन्ध ठीक हो सकता है ? आप अपने जीवन के छोटे-छोटे मामलों में भी इनका तजरबा करते है कि जहां एक काम को एक से अधिक लोगों की जिम्मेदारी पर छोड़ा जाता है, वहां अत्यंत अव्यवस्था और वदनजमी पैदा हो जाती है। लड़ाई-झगड़े होते है और अंत में साझें की हडिया एक दिन चैराहे में फूट कर रहती है। इंतजाम (प्रबंध) नियमितता, एकरूपता और सलीका दुनिया में जहां भी आप देखते है, वहां निश्चित रूप से किसी ताकत का हाथ होता है, कोई एक ही बुजूद इख्तियार और प्रभुत्वाला होता है और किसी एक ही के हाथ में सारे कामों की वागडोर होती है, उनके बिना प्रबंध की आप कल्पना नहीं कर सकते।

यह ऐसी सीधी बात है कि कोई व्यक्ति जो थोड़ी अक्ल भी रखता हो इसे मानने में संकोच या हिचकिचाहट न करेगा। इस बात को ध्यान में रखकर जरा अपने आसपास की दुनिया पर नजर डालिए। यह विशाल संसार जो आपके

सामने फैला हुआ है, ये करोड़ो नक्षत्र जो आपके ऊपर चक्कर लगाते दिखाई देते है, यह धरती जिस पर आप रहते है, यह चांद जो रातों को निकलता है, यह सूरज जो प्रत्येक दिन उगता है, यह शुक्र, यह मंगल, यह बुध, यह वृहस्पति और ये दूसरे अनगिनत तारें जो गेदों की तरह धूम रहे है, देखिए इन सबकें धूमने मे किसी शख्त और अटल नियमितता है!

कभी रात अपने समय से पहले आती हुई आपने देखी? कभी दिन अपने समय से पहले निकला? कभी चांद धरती से टकराया? कभी सूरज अपना रास्ता छोड़कर हटा ? कभी किसी तारे को आपने एक बाल बरावर भी अपनी गरदिश की राह से हटते हुए देखा या सुना ? ये करोड़ों ग्रह और जिसमें से कुछ हमारी धरती से लाखो गुनाह बड़े है और कुछ सूरज से भी हजारे गुना बड़े है। ये सब घड़ी के पुर्जो की तरह एक जबरदस्त नियम में कसें हुए है और एक बधं हुए हिसाब के अनुसार अपनी-अपनी निश्चित गति के साथ अपने-अपने निश्चित मार्ग पर चल रहे है। न किसी की रफ्तार में जरा भी फर्क पड़ता है न कोई अपने रास्ते से बाल बराबर टल सकता है। उनके बीच जो संबधं और निश्चतें कायम कर दी गयी है, अगर उनमें एक पल के लिए जरा सा भी अन्तर आ जाए तो विश्व का समस्त प्रंबंध ही छिन्न-भिन्न हो जाए, जिस प्रकार रेले टकराती है उसी प्रकार ग्रह एक दूसरे से टकरा जाए।

यह तो आकाश की बातें है। अब जरा अपनी धरती और खुद अपने ऊपर नजर डालकर देखिए, इस मिट्टी की गेंद पर जीवन का यह सारा खेल जो आप देख रहे है, यह सब कुछ बंधे हए नियमों और जाब्तों की बदोलत कायम है। धरती की आकर्षण-शक्ति ने सारी चीजों की अपने दायरे में बांध रखा है। एक सेकेंड के लिए भी अगर वह अपने बंधन से मुक्त कर दे तो सारा कारखाना बिखर जाए, इस कारखाने में जितने कल-पूर्जे काम कर रहे है, सब के सब एक नियम में बंधे हुए है और इस नियम में कभी अन्तर नहीं आता। हवा अपने नियम का पालन कर रही है, पानी अपने नियम में बंधा हुआ है, रोशनी के लिए जो नियम है उस पर वह चल रही है, गर्मी और सर्दी के लिए जो नियम है उसकी वह पावंद है मिट्टी, पत्थर, धातुये, बिजली, भाप, पेड़, जानवर किसी में यह मजाल नहीं है कि अपनी हद से बढ़ जाए या अपनी फितरतों (स्वभाव) और गुणों को बदल दे या उस काम को छोड़ दे, जो उसे सौंपा गया है।

फिर अपनी-अपनी हद के अन्दर अपने-अपने नियम का पालन करने के साथ इस कारखाने के सारे पुर्जे एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर रहे है और दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है सब इसलिए हो रहा है कि ये सारी चीजे और सारी ताकते मिलकर काम कर रही है। इस मामूली से बीज की ही मिसाल ले लीजिए, जिनको आप धरती में बोते है, वह कभी विकसित होकर पेड़ बन ही नही सकता, जब तक कि धरती और आकाश की सारी शक्तियां मिलकर उनको पालने-पोसने में हिस्सा न ले। धरती अपने खजानो से उसको भोजन देती है, सूरज उसकी जरूरत के मुताबिक उसे गर्मी पहुंचाता है, पानी से जो कुंछ वह मांगता है, वह पानी दे देता है, हवा से वह जो कुछ चाहता है वह दे देता है, राते उसके लिए ठंडक और ओसं का इंतजाम करती है, दिन उसे गर्मी पहुचांकर पुंख्तगी (परिपक्वता) की ओर ले जाता है, इस प्रकार महीने और सालो तक लगातार एक नियम और कायदे के साथ ये सब मिल-जुल कर उसे पालते-पोशते है, तब जाकर कही पेड़ बनता है और उसमें फल आते है। आपकी ये सारी फसलें जिनकें बलबूते पर आप जी रहे है, इन्हीं बेसुमार तरह-तरह की शक्तियों के मिल-जुल कर काम करने ही की वजह से तैयार होती है, बल्कि खुद आप जिंदा इसी वजह से है कि धरती और आकाश की तमाम शक्तियां मिलकर आपके पालन-पोषण में लगी हुई है। अगर सिर्फ एक हवा ही इस काम में अपना सहयोग देना छोड़ दे तो आप खत्म हो जाएंगे। यदि पानी हवा और गर्मी के साथ सहयोग करने से इन्कार कर दे तो आप पर वारिश की एक बूंद बरस सकें। यदि मिट्टी पानी के साथ सहयोग करना छोड़ दे तो आपके वाग सूख जाए, आपकी खेतिया कभी न पके और आपके मकान कभी न बन सके। यदि दियासलाई की रगड़ से आग पैदा होने पर तैयार न हो तो आपके चूल्हें ठंडे हो जाए और आपके सारे कारखाने फौरन ठप हो जाए। यदि लोहा आग के साथ सम्बंध रखने से इन्कार कर दे तो आप रेले और मोटरें तो दूर रही, एक छुरी और एक सुई तक न बना सके। यानि यह सारी दुनिया जिसमें आप जी रहे है, यह केवल इस कारण कायम है कि इस विशाल जगत के सभी विभाग पूरी पांबदी के साथ एक-दूसरे से मिलकर काम कर रहे है ंऔर किसी विभाग के किसी कर्मचारी की यह मजाल नहीं है कि अपनी डयूटी से हट जाए या नियमानुसार अन्य विभाग के कर्मचारियों से सहयोग का मामला न करें।

यह जो कुछ मैने आपसे बयान किया है, क्या इसमें कोई बात गलत या सत्य के विरुध है? शायद आपमें से कोई भी किसे हरगिज असत्य न कहेगा। अच्छा यदि यह सच है तो मुझे बताये कि यह जवरदस्त प्रंबंध, यह

आश्चर्यजनक नियमितता, यह उच्च कोटि की एकरूपता, यह आकाश और धरती की असीन एवं अनगिनत चीजों और शक्तियों में पूर्ण सामंजस्य तालमेल का आखिर कारण क्या है ?

करोड़ो सालों मे यह सृष्टियों ही कायम चली आ रही है, लाखों साल से इस धरती पर पेड़-पौधे उग रहे है, जीव-जन्तु पैदा हो रहे है और न जाने इस धरती पर कब से इन्सान जी रहा है। कभी ऐसा न हुआ कि चांद जमीन पर गिर जाता, या जमीन सूरज से टकरा जाती, तभी रात और दिन के हिसाब में अंतर न आया, कभी हवा के विभाग की जल विभाग से लड़ाई न हुई, कभी पानी मिट्टी से न रूठा, कभी गर्मी ने आग से नाता न तोड़ा। आखिर इस सल्तनत के समस्त प्रांत, तमाम विभाग, हरकारे और कारिन्दे
क्यों इस प्रकार कानून और नियम का पालन किए चले जा रहे है ? क्यों उनमें लड़ाई नहीं होती ? क्यों विद्रोह उत्पन्न नहीं होता ? किस चीज की वजह से ये सब एक व्यवस्था मेें बधे हुए है ? इसका उत्तर अपने दिल से पूछिये। क्या वह गवाही नहीं देता कि एक ही ईश्वर इस सारे विश्व का प्रभु और शासक है, एक ही का आदेश सब पर चल रहा है, एक ही है जिसकी जवरदस्त शक्ति ने सबकों अपने नियम और जाब्तों में बांध रखा है ? यदि दस-बीस नहीं दो खुदा भी इस दुनिया के मालिक होते तो यह व्यवस्था इस नियमित रूप से कभी न चल सकती। एक मामूली से स्कूल का प्रंबंध तो दो हैड मास्टरों की हैड मास्टरी सहन नहीं कर सकता, फिर भला इतनी बड़ी जमीन और आकाश की सल्तनत दो प्रभुओं की प्रभुत्ता और दो खुदाओं की खुदाई में कैसे चल सकती थी ?

अतः सत्य केवल इतना ही नहीं है कि यह दुनिया किसी बनाने वाले के बिना नहीं बनी है, बल्कि यह भी सत्य है कि इसको एक ही ने बनाया है सत्य केवल इतना ही नहीं है कि इस विश्व का प्रंबंध बिना किसी शासक के नहीं हो रहा है, बल्कि यह सत्य है कि यह शासक एक ही है। प्रंबंध की सुव्यवस्था साफ कह रही है कि यहां एक के सिवा किसी के हाथ में राज्य के अधिकार नहीं हैं। कानून की पाबन्दी मुंह से बोल रही है कि इस राज्य में एक हाकिम के सिवाय किसी का हुकुम नहीं चलता। कानून का शक्ति से चलना गवाही दे रहा है कि एक वादशाह का राज्य धरती से आकाश तक कायम हैं। चांद सूरज और अन्य ग्रह उसी के हाथ में है। जमीन अपनी तमाम चीजों के साथ उसी का आज्ञापालन कर रही है, हवा उसी की गुलाम है, पानी उसी का दास है, नदी और पहाड़ उसी के अधीनस्थ है, पेड़ और जीव-जन्तु उसी की आज्ञा का पालन कर रहे है, मनुष्य का जीना और मरना उसी के अधिकार में है। उसकी मजबूत पकड़ ने सबको पूरी ताकत के साथ जकड़ रखा है और किसी में इतना बल नहीं है कि उसके राज्य में अपना हुकम चला सके।
वास्वत में इस संपूर्ण व्यवस्था में एक से अधिक हाकिमों के लिए गुजांइस ही नहीं है। व्यवस्था में प्रकृति यह चाहती है कि आज्ञा लागू करने में कर्ण मात्र भी कोई उसका भागीदार न हो, अकेले वही हुकम देने वाला हो और उसके सिवा सब मातहत और अधीन हो। क्योंकि किसी दूसरे के हाथ में हुकम देने या राज-कार्य का मामूली-सा अधिकार देने का मतलब ही यह होता है कि अव्यवस्था और हसाद पैदा हो। हुकम चलाने के लिए केवल ताकत ही जरूरी नहीं है, ज्ञान भी जरूरी है। इतनी व्यापक दृष्टि की जरूरत है जो समस्त विश्व को एक ही समय में देख सकें और उसकी मस्लहतो को समझ कर आदेश जारी कर सकें। अगर जगत स्वामी के सिवा कुछ छोटे-छोटे खुदा ऐसे होते जो संपूर्ण विश्व को देखने वाली नजर तो न रखते किंतु उन्हें संसार के किसी हिस्से या किसी मामले में अपना हुकम चलाने का अधिकार प्राप्त होता, तो यह धरती और आकाश का सारा कारखाना छिन्न-भिन्न होकर रह जाता। एक मामूली मशीन के वारे में भी आप जानते है कि यदि किसी ऐसे व्यक्ति को उसमें हस्तक्षेप का अधिकार दे दिया जाए, जो उससे भली-भांति परिचित न हो तो यह उसे विगाड़ कर रख देगा। इसलिए अक्ल यह फैसला करती है, धरती और आकाश की सल्तनत की व्यवस्था का अत्यंत नियमित रूप से चलना इस बात की गवाही देता है कि इस सल्तनत के साही इख्तियारात में एक ईश्वर के सिवा और किसी का कर्ण-मात्र भी हिस्सा नही है।

यह केवल एक वास्तविकता ही नही है, बल्कि सत्य यह है कि ईश्वर के शासन-क्षेत्र में उसके अलावा किसी और का हुकम चलने की कोई वजह भी नही। जिनको उसने स्वयं अपनी शक्ति से उत्पन्न किया है, जो उसकी रचना है, जिनका अस्तित्व उसकी दया से कायम है, जो उसे वेपरवाह होकर स्वयं अपने बलबूते पर एक छड के लिए भी मौजूद नही रह सकते, उनमें से किसी की यह हैसियत कब हो सकती है कि खुदाई में उसका हिस्सेदार बन जाए? क्या किसी नौकर को अपने मिल्कियत में मालिक का साझीदार होते देखा है? क्या आपकी अक्ल में यह बात आती है कि कोई मालिक अपने गुलाम को अपना साझी बना ले? क्या खुद आप में से कोई व्यक्ति अपने नौकरों मे से किसी को अपनी जायदाद में या अपने अधिकारों मे हिस्सेदार बनाता है? इस बात पर जब आप विचार करेंगे तो आप का दिल गवाही

देगा कि खुदा के इस राज्य में किसी वन्दे को स्वतंत्र रूप से शासन का स्वाधिकार प्राप्त ही नही है ऐसा होना न केवल वास्तविकता के विरुद्ध है, न केवल अक्ल और प्रकृति के विरुद्ध है, बल्कि सत्य के विरुद्ध भी है।

इनसान की बर्बादी की अस्ल वजह

सज्जनों! यह वे बुनियादी तथ्य है जिन पर इस संसार की सम्पूर्ण व्यवस्था चल रही है आप इस संसार से अलग नहीं है, बल्कि उसके अन्दर उसके एक अंश की हैसियत से रहते है। अतः आपके जीवन के लिए भी यह तथ्य इसी प्रकार बुनियादी है जिस प्रकार सारे संसार के लिए है।

आज यह प्रश्न आपमें से हर व्यक्ति के लिए और संसार के तमाम इंसानों के लिए एक चिंताजनक गुत्थी बना हुआ है कि आखिर हम इंसानो के जीवन से शक्ति और चयन क्यों बिदा हो गया है ? क्यों प्रतिदिन मुसीबतेे और परेशानियाँ हम पर आ रही है, क्यों हमारे जीवन की कल बिगड़ गयी है ? राश्ट्र राश्ट्रों से टकरा रहे है। देश-देश में खीचां तानी हो रही है। इंसान-इंसान के लिए भेड़िया बन गया है। लाखों लोगा लड़ाईयों में मारे जा रहे है। करोड़ो और अरबो के व्यापार तहस-नहस हो रहे है। बस्तियाँ- की-बस्तियाँ उजड़ रही है। ताकतवर कमजोरों को खाए जाते है, मालदार गरीबो को लूट लेते है। राज्य में अत्याचार है, अदालत में अन्नाय है, धन में उन्माद और बदमस्ती है, सत्ता में अंहकार और धमंड है, दोस्ती में बेवफाई है, अमानत में खपानत है आचार-व्यवहार में सत्यता नहीं रही, इंसान पर से इंसान का विश्वास उठ गया, धर्म की आढ़ में अधर्म हो रहा है, आदम के बच्चे असंख्य गरोहों में बटे हुए है और हर गिरोह दूसरे गिरोह को धोखा, अत्याचार और बेइमानी हर संभव तरीके से नुकशान पहुंचाना नेकी और पुन्य का काम समझ रहा है। आखिर इंसारी खुराबियों और बुंराइयों की वजह क्या है ? खुदा की खुदाई में और जिस ओर भी हम देखते है शांति-ही-शांति दिखाई देती है, नक्षत्रों में शांति है, हवा में शांति है, पानी में शांति है, पेड़ो और जीव-जन्तुओं मे शांति है, पूरे जगत का प्रंबंध पूरी शांति के साथ चल रहा है, कहीं अव्यवस्था या अशांति का चिन्ह नहीं पाया जाता है। मगर इंसान ही की जिंदगी क्यों इस ईश्वरीय देन से वंचित हो गयी है ?

यह एक बड़ी समस्या है जिसें हल करने में लोगो को बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। किंतु में पूरे यकीन और इत्मिनान के साथ उसका जबाव देना चाहता हूँ। मेरे पास इसका संक्षिप्त उत्तर यह है कि आदमी ने अपने जीवन की वास्तविकता और सत्यता के विरुद्ध बना दिया है। इसलिए वह परिशानी उठा रहा है और जब तक वह फिर उसे वास्तविकता के अनुसार न वनाएगा, कभी चैन न पा सकेगा। आप चलती हुई रेल के दरबाजे को अपने धर का दरबाजा समझ बैठे और उसे खोलकर बेझिझक इस प्रकार बाहर निकल आये, जैसे अपने मकान के आंगन में पांव रख रहे है तो आपकी इस नासमझी से न रेल का दरबाजा घर का दरबाजा बन जाएगा और न वह मैदान जहां आप गिरेंगे आप के घर का आंगन सिद्ध होगा। आपके अपनी जगह कुछ समझ बैठने से हकीकत जरा भी न बदलेगी। तेज दौड़ती हुई रेल के दरबाजे से जब आप बाहर पधारेगें तो उसका जो नतीजा सामने आना है वही सामने आ कर रहेगा चाहे टांग टूटने और सिर फूटने के बाद भी आप यह स्वीकार न करें कि आपने जो कुछ समझा था गलत था। ठीक इसी तरह अगर आप यह समझ वैठे कि इस दुनिया का कोई ईश्वर नहीं है या आप खुद अपने ईश्वर बन बैठे या ईश्वर के अलावा किसी और का प्रभुत्व मान ले, तो आप के ऐसा समझने या मान लेने से सच्चाई कभी नहीं बदलेगी। ईश्वर, ईश्वर ही रहेगा। इसका विराट, साम्राज्य, जिसमें आप केवल प्रजा और जनता के रूप में रहते पूरे अधिकारों के साथ उसी के कब्जें में रहेगा, अलबत्ता आप अपनी इस गलतफहमी की बजह से जिन्दगी गुजारने का जो तरीका इख्तियार करेंगे उसका बहुत ही बुरा नतीजा आपको भुगतना पड़ेगा चाहे आप कष्ट उठाने के बाद भी अपनी इस गलत जिन्दगी को अपने तौर पर सत्य ही समझते रहे।

पहले जो कुछ में कह चुका हूँ उसे तनिक अपने दिमाग में फिर ताजा कर लीजिए। पूरे जगत का ईश्वर किसी के बनाने से पूरे जगत का ईश्वर नहीं बना है। वह इसका मौहताज नहीं है कि आप उसकी खुदाई माने तो यह खुदा हो, आप चाहे माने या न माने वह तो स्वयं खुदा है उसका राज और प्रभुत्व स्वयं अपने बल पर कायम है। उसने आपको और इस विश्व को खुदा बनाया है। यह धरती, यह चांद, यह सूरज और यह सारी सृष्टि उसके हुकम की पाबंद है। इस सृष्टि में जितनी शक्तियाँ काम कर रहीं है, सब उसके हुकम की पाबंद है। वे सारी चीजें जिनके बल पर आप जिन्दा है, उसी के अधिकार-सूत्र में बंधी है, खुद आपका अपना बजूद उसके अधिकार में है, इस सत्य को आप किसी प्रकार बदल नहीं सकते। आप इसको न माने तब भी यह सत्य हैं। आप इससे आंखे बंद कर ले तब भी यह सत्य है, आप इसके सिवा

कुछ और समझ बैठे तब भी यह सत्य है। इन सब स्थितियों में सत्य का तो कुछ भी नही विगड़ता अलबत्ता फर्क यह होता है कि यदि आप इस सत्य को स्वीकार करके अपनी वही हैसियत मान ले जो इस सत्य के अनुसार वास्तव में आपकी है, तो आपका जीवन ठीका होगा, आपको चैन मिलेगा, शांति मिलेगी, संतोष और इत्मिनान नसीब होगा और आपके जीवन की सारी कल ठीक चलेगी। और अगर आपने इस सत्य के विरुद्ध कोई और हैसियत अपनाई तो अन्जाम वहीं होगा जो चलती हुई रेल के दरबाजे को अपने घर का दरवाजा समझकर पांव बाहर निकालने का होता हे। चोट आप खुद खाऐगे, टांग आपकी टूटेगी, सिर आपका फटेगा, तकलीफ आपको पहुंचेगी, सत्य जैसा था वैसा ही रहेगा।

आप पूछेंगे की इस सत्य के अनुसार हमारी सही हैसियत क्या है? में कुछ शब्दों मे उसकी तफशील बयान कर देता हूँ। अगर किसी नौकर को आप तनख्वा देकर पाल रहे हो तो बताइयें उस नौकर की असली हैसियत क्या है ? यही न कि वह आपकी नौकरी करें, आपकी आज्ञा का पालन करे, आपके इच्छानुसार काम करे, और नौकरी की सीमा से ना बढ़े। नौकर का काम आखिर नौकरी के सिवा क्या हो सकता है? आप अगर अफसर हो और कोई आपका मातहत और अधीन हो तो अधीन का काम क्या है? यही न कि वह आज्ञा पालन करें, अफसरों की हवा में न रहें। अगर आप किसी जायदाद के मालिक हो तो उस जायदाद में आपकी इच्छा और मर्जी क्या होगी ? यही न कि उसमें आपकी इच्छा चले जो कुछ आप चाहे वही उसमें हो और आप की इच्छा के विरुद्ध पत्ता न हिल सके। यदि आप पर कोई सत्ता अधिकार जमाये हुए हो और तमाम षक्तियाँ उसके साथ में हो तो ऐसे शासन के होते हुए आपकी हैसियत क्या हो सकती है ? यही न कि आप सीधी तरह प्रजा बनकर रहना स्वीकार करे और शासन के नियम के आज्ञा पालन से कदम बाहर न निकाले। वादशाह के राज्य के अन्दर रहते हुए अगर आप स्वयं अपनी बादशाही का दावा करेंगे या किसी दूसरे की वादशाही मानकर उसके हुक्म पर चलेगें तो आप विद्रोही होगें और विद्रोही के साथ जो वरताव किया जाता है वह आपकों मालूम ही है।

इन मिसालों से आप खुद समझ सकते है कि खुदा कि इस सल्तनत में आपकी सही हैसियत क्या है? आपकों उसने बनाया है। स्वाभाविक रूप से आपका काम इसके सिवाय कुछ नहीं है कि अपने बनाने वाले की इच्छा पर चले। आपकों वह पाल रहा है और उसी खजाने से आप तनख्वाह ले रहे है, आपकी कोई हैसियत इसके सिवा नहीं है कि आप उसके नौकर है, आपका और सारी दुनिया का शासक वही है। उसके शासन में आपकी हैसियत आज्ञाकारी और मातहत के सिवा और क्या हो सकती है ? यह धरती और आकाश सब उसकी मिल्कियत है, इस मिल्कियत में उसी की मर्जी चलेगी और उसी की चलनी चाहिए। आप को यहां अपनी मर्जी चलाने का कोई हक नहीं है। यदि आप अपनी मर्जी चलाने की कोशिस करेगे तो मुँह की खाएँगे। इस सल्तनत में उसका शासन उसके अपने बल पर कायम है। धरती और आकाश के समस्त विभाग उसके अधिकार में है, और आप चाहे राजी हो या न हो, आप हर हालत में आप-से-आप उसकी प्रजा है। आप की और किसी इन्सान की भी चाहे वह छोटा हो या बड़ा, कोई और हैसियत प्रजा होने के सिवा नहीं है, उसी का कानून इस सल्तनत में कानून है और उसी का हुक्म, हक्म है। प्रजा में से किसी को यह दावा करने का अधिकार नहीं है कि में 'हिजमैजेस्टी' हूँ, या 'हिजहाइनैस' हूँ, या डिक्टेटर और सर्वेसर्वा हूँ। न किसी व्यक्ति या पार्लियामेन्ट या असेम्बली या काउंसिल को यह अधिकार प्राप्त है कि इस राज्य में ईश्वर के वजाय स्वयं अपना कानून बनाए और ईश्वर की प्रजा से कहे कि हमारे इस कानून का पालन करों। न किसी इसंानी सरकार को यह अधिकार प्राप्त है कि ईश्वर के हुकम से वेपरवाह होकर ईश्वर के वन्दों पर स्वयं अपना हुकम चलाये और उससे कहें कि हमारे इस हुकम का पालन करो। न किसी इंसान और न किसी इंसानी गरोह के लिए यह जाइज है कि असली वादशाह की प्रजा बनने के बजाह वादशाही के झूठे दावेदारों में से किसी की प्रजा बनना स्वीकार करे। असली वादशाह के कानून को छोड़कर झूठे कानून बनाने वालो का कानून स्वीकार करे और असली शासक से मुुँह मोडकर झूठ-मूठ की उन सत्ताओं का हुकम मानने लगे, ये तमाम स्थितियाँ विद्रोह की है। वादशाहों के अधिकार का दावा करना और ऐसे दावे को स्वीकार करना दोनो काम प्रजा के लिए विद्रोह का हंुकम रखती है और इस विद्रोह की सजा उन दोनो को मिलना निश्चित है चाहे जल्दी मिले या देर में।

आपकी और प्रत्येक इनसान की चोटी क बाल ईश्वर की मुट्ठी में है, जब चाहें पकड़कर घसीट ले। जमीन और आसमान के इस राज्य से भाग जाने की शक्ति किसी में नहीं है। आप इससे भगवान कहीं पनाह नहीं ले सकते। मिट्टी में मिलकर अगर आपका एक-एक कण छिन्न-भिन्न हो जाए, आग में जलकर चाहे आपकी राख हवा में फैल जाए, पानी में बहकर चाहें आप मछलियों का भोजन बन जाएँ या समुद्र के पानी में घुल जाएँ, ही जगह से ईश्वर आपको पकड़ कर

बलाएगा। हवा उसकी सेविका है, धरती उसकी दासी है, पानी और मछलियाँ सब उसके हुकम के पाबन्द है। एक इशारे पर आप सब तरफ से पकड़ में आ जाएँगे, और फिर वह आप में से एक-एक को बुलाकर पूछेगा कि मेरी प्रजा होकर बादशाही का दावा करने का अधिकार तुम्हें कहाँ से पहुँच गया था ? मेरे राज्य में अपना हुक्म चलाने का अधिकार तुम कहाँ से लाए थे ? मेरे राज्य में आपना कानून लागु करनेवाले तुम कौन थे ? मेरे बन्दें होकर दूसरो का बन्दगी करने के लिए तुम कैसे राजी हो गए ? मेरे नौकर होकर तुमने दूसरों का हुक्म मान, मुझसे तनख्वाह लेकर दूसरो को अन्नदाता और रोजी देनेवाला समझा, मेरे गुलाम होकर दूसरों को अन्नदाता और रोजी देनेवाला समझा, मेरे गुलाम होकर दूसरों की गुलामी की मेरे राज्य में रहते हुए दूसरो की सत्ता स्वीकार की, दूसरों के कानून को कानून समझा और दूसरों के आदेशों का पालन किया, यह विद्रोह किस प्रकार तुम्हारे लिए उचित हो गया था। कहिए आप में से किसके पास इस आरोप आ उत्तर है ? कौन-से वकील साहब वहाँ आने कानूनी दाँव-पेच से बचाव का उपाय निकाल सकेगे ? और कौन-सी सिफारिश पर आप भरोसा रखते है कि वह आपको इस विद्राहे के जुर्म की सजा भुगतने से बचा लेगी ?

जुल्म की वजह

भाइयो! यहाँ केवल अधिकार ही का प्रश्न नहीं है। यह प्रश्न भी है कि ईश्वर के इस ऐश्वर्य (शासन क्षेत्र) में क्या कोई इनसान बादशाही करने या कानून बनाने का या हुक्म चलाने के योग्य हो सकता है ? जैसा कि में अभी कह चुका हूँ कि एक मामूली मशीन के बारे मे भी आप यह जानते है कि अगर कोई अनाड़ी आदमी जो उसकी मशीनरी का जानकार न हो, उसे चलाएगा तो उसे बिगाड़ देगा। जरा किसी अनाड़ी इन्सान में एक कार चलवाकर देख लीजिए। अभी आपकों मालूम हो जाएगा कि इस वेवकूफी का क्या अंजाम होता है। अब खुद सोचिए कि लोंहे की एक मशीन का हाल जब यह है कि सही जानकारी के बिना उसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, तो इन्सान जिसकी मनोवृत्तियाँ अत्यन्त उलझी हुई है, जिसके जीवन के मामले बेशुमार पहलू रखते है और हर पहलू में लाखों गुत्थियाँ है, उसकी उलझी हुई मशीनरी को वे लोग क्या चला सकते है, जो दूसरों को जानना और समझना तो एक तरफ, खुद अपने आपकों भी अच्छी तरह नहीं जानते - नही समझते ? ऐसे अनाड़ी जब विधान-निर्माता और कानूनसाज बन बैठेंगे और ऐसे नादान जब इन्सान केे जीवन की ड्राइवरी करने पर तैयार होंगे तो क्या इसका अंजाम किसी अनाड़ी आदमी के कार चलाने के अंजाम से कुछ भी भिन्न हो सकता है ? यही वजह है कि जहाँ ईश्वर के बजाए इन्सानों का बनाया हुआ कानून माना जा रहा है और जहां ईश्वर के आज्ञापालन से बेपरवाह होकर मनुष्य हुक्म और आदेश दे रहे है, और मनुष्य उनका आज्ञापालन कर रहे है, वहाँ किसी जगह भी शांति नहीं है, किसी जगह भी आदमी को सुख प्राप्त नहीं है, किसी भी जगह इन्सानीं जिंदगी की कल सीधी नहीं चलती। रक्तपात और हत्याएँ हो रही है, अत्याचार और अन्याय हो रहा है। लूटखसोट का बाजार गर्म है आदमी का खून आदमी चूस रहा है। अखलाफ और सदाचार तबाह हो रहे है, सेहत और तन्दुरुस्ती नष्ट हो रही है, सारी शक्तियाँ जो ईश्वर ने मनुष्य को दी थी, मनुष्य के लाभ के बजाए उसके विनाश और बरबादी में खर्च हो रही है। यह स्थायी नरक जो इसी दुनिया में इन्सान ने अपने लिए खुद अपने हाथो बना लिया है, उसकी वजह इसके सिवा और नही है कि उसने बच्चों के समान शौक में आकर इस मशीन को चलाने की कोशश की, जिसके कल-पुर्जे से वह परिचित ही नहीं। इस मशीन को जिसने बनाया है, वही इसके रहस्यों को जानता है, वही इसकी प्रकृति से परिचित है, उसी को भली-भाँति मालूम है कि यह किसा प्रकार ठीक चल सकती है। अगर इन्सान अपनी बेवकूफी छोड़ दे और अपनी अज्ञानता स्वीकार करके उस नियम का पालन करने लगे जो खुद इस मशीन को बनानेवाले ने निश्चित किया है, तब तो जो कुछ बिगड़ा है वह फिर बन सकता है, नहीं तो इन संकटों को कोई हल सम्भव नहीं है।

अन्याय क्यों है ?

आप तनिक और गहरी नजर से देंखे तो आपको अज्ञानता के सिवा अपने जीवन के बिगाड़ का एक और कारण भी दिखाई देगा। थोड़ी-सी अक्ल यह बात समझने के लिए काफी है कि इन्सान किसी एक व्यक्ति या एक परिवार या एक जाति का नाम सही है। संपूर्ण संसार के इन्सान हर हाल में इन्सान है। सारे इन्सानों को जीने का अधिकार है, सब इसके अधिकारी है कि उनकी जरूरतें पूरी हो। सब शांति के, न्याय के, मान और सम्मान के अधिकारी है। इन्सानी खुशहाली अगर किसी चीज का नाम है तो वह किसी एक व्यक्ति या परिवार या जाति की खुशहाली नही, बल्कि तमाम इन्सानों की खुशहाली है। अन्यथा एक खशहाल हो और दस बदहाल हों तो आप यह नहीं कह सकते कि इन्सान

खुशहाल है। कल्याण अगर किसी चीज को कहते है तो वह सारे इन्सानों का कल्याण है, न कि किसी एक वर्ग या एक जात का। एक के कल्याण और दस के विनाश को आप मानव-कल्याण नहीं कह सकते। इस बात को अगर आप सही समझते है तो विचार कीजिए कि मानव-कल्याण और खुशहाली किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। मेरी राय में इसका कोई उपाए इसकें सिवा नहीं है कि मानव-जीवन के लिए नियम वह बनाए, जिसकी नजर में सारे इन्सान एक समान हो। वह सबके हक और अधिकारी को न्याय के साथ निश्चित करे, वह खुद न तो अपना कोई व्यक्तिगत स्वार्थ रखताहो और न किसी परिवार या वर्ग के या किसी देश या जाति के लाभ से संबधित हो। सबके सब हुक्म उसी का माने जो हुक्म देने में न अपनी अज्ञानता के कारण भूल करें न अपनी इच्छाओं और ख्वाहिशों के कारण राज्यधिकारों से अनुचित लाभ उठाये, और न एक का दुश्मन और दूसरे का दोस्त, एक का पछपाती और दूसरे का विरोधी, एक की और झुका और दूसरे से खिंचा हो। केवल इसी अव्यवस्था में न्याय स्थापित हो सकता है। इसी तरह सारे इन्सानों, सभी जातियों, सभी वर्गो और सभी दलों को उनके उचित अधिकार मिल सकते है और यदि एक उपाय है जिससे अन्याय मिट सकता है।

अब में पूछता हूं कि संसार में कोई इन्सान भी ऐसा बेलाग, ऐसा निष्पक्ष, ऐसा निस्वार्थः और इतना अधिक मानव-दुर्बलताओं से उच्चतर हो सकता है ? शायद आप में से कोई व्यक्ति मेरे इस प्रश्न के उत्तर मे हां कहने का साहस न करेगा। यह महान विशेसता केवल ईश्वर ही के लिए है, कोई दूसरा इस विशेसता का नहीं है। इन्सान चाहे कितना ही उदार-हृदय क्यों न हो, तब भी वह अपने कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ रखता है, कुछ मनोकामनाएँ रखता है, किसी से उसका सम्बध अधिक है और किसी से कम, किसी से प्रेम है और किसी से नहीं है, किसी से उसको लगाव है और किसी से नहीं है। इन दुर्बलताओं से कोई इन्सान परे नही हो सकता । यही वजह है कि जहां ईश्वर के स्थान पर इन्सान का नियम माना जाता है और ईश्वर के स्थान पर इन्सानों का आज्ञापालन किया जाता है, वहां किसी-न-किसी रूप में अत्याचार और अन्याय अवश्य पाया जाता है।

उन राजपरिवारों को देखिए जो जबरदस्ती अपनी शक्ति के बलबूते पर विशेष अधिकार प्राप्त किए हुऐ है। उन्होंने अपने लिए यह समान वह ठाठ, वह आमदनी, वे हक अधिकार खासकर लिए है, जो दूसरे के लिए नहीं है। ये कानून से परे है, इसके विरुद्ध कोई दावा नही किया जा सकता। ये चाहे कुछ करें इनके विरुद्ध कोई कारवाही नही की जा सकती। कोई अदालत उनके नाम समन नहीं भेज सकती। दुनिया देखती है कि ये गलतिया करते है किन्तु कहा यह जाता है और मानने वाले ही मान लेते है कि बादशाह गलती से पाक है दुनिया देखती है कि ये साधारण इन्सान है जैसे और इन्सान होते है, किन्तु वह ईश्वर बनकर सबसे ऊँचे बैठते है और लोग उनके सामने यों हाथ बाधें, सिर झुकाये डरे-सहमे खड़े होते है, जैसी उनकी जीविका, उनका जीवन, उनकी मौत, सब उनके हाथ में है। ये प्रजा का पैसा अच्छे और बुरे हर प्रकार से समेंटतें है और अपने महलो पर अपनी सवारियों पर, अपने ऐसो-आराम और भोग-विलास और अपने मनोंरंजन पर बेझिझक लुटाते है। उनके कुत्तों को वह रोटी मिलती है जो कमा कर देने वाली जनता को नसीब नहीं होती। क्या यह न्याय है? क्या यह नियम किसी ऐसे न्यायवान का बनाया हुआ हो सकता है, जिनकी नजर में सब इन्सानों के हक और अधिकार और लाभ समान हो ?

इन ब्राहमंणों और पीरो को देखिए, इन नबावों और राजाओ को देखिए, इन जागीदारो और जमीदारों को देखिए, इन साहूकारों और महाजनो ंको देखिए, ये सब वर्ग अपने आप को आम इन्सानों से उच्च समझते है। उनके जोर और असर से जितने नियम संसार में बने है वे उन्हें ऐसे अधिकार देते है जो आम इन्सानों को नही दिए गए। ये पवित्र है और दूसरे अपवित्र, ये शिष्ट है और दूसरे अशिष्ट, ये ऊँचे है और दूसरे नीचें, ये लूटने वाले है और दूसरे लुटने के लिए। इनके मन की इच्छाओं पर लोगों की जान माल, इज्जत, आवरु हर एक चीज भेंट चढ़ा दी जाती है। क्या ये नियम किसी न्यायकत्ता के बनाये हुए हो सकते है ? क्या इनमें खुले तौर पर स्वार्थ परता और पक्षपात दिखाई नहीं देता?

इन शासक लोगों को देखिए जो अपनी शक्ति के बल पर दूसरे लोगो को गुलाम बनाये हुए है। उनका कौन सा नियम और कौन सा विधान ऐसा है जिसमें स्वार्थ शामिल नहीं है ? ये अपने आप को सबसे ऊँचा इंन्सान कहते है, बल्कि वास्तव में केवल अपने ही को ही इन्सान समझतें है। उनके निकट कमजोर जातियों के लोग या तो इन्सान ही नहीं है या यदि है तो निचले दर्जे के है। ये हर हैसियत से अपने आप को दूसरे से ऊँचा ही रखते है और अपने स्वार्थो पर दूसरों के लाभ को भेंट चढ़ाना अपना अधिकार समझते है। उनकें जोर और प्रभाव से जितने नियम और विधान संसार में बने है, उन सब में यह रंग मौजूद है।

ये कुछ मिसालें मैने सिर्फ इशारे के तौर पर दी है, विस्तार का यहां अवसर नहीं है। में केवल यह बात आपकें मस्तिष्क में बिठाना चाहता हूँ कि दुनिया में जहां भी इन्सान ने कानून बनाया है वहां अन्याय हआ है कुछ इंन्सानों को उनके उचित अधिकार से बहुत अधिक दिया गया है। और कुछ इंसानों के अधिकार न केवल हड़प लिए गए है, बल्कि उन्हें इन्सानियत के दर्जे से गिरा देने मे भी सकोंच नहीं किया गया है। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि वह जब किसी मामले का फैसला करने बैठता है तो उसके दिल और दिमाग पर खुद का या अपने खानदान या अपनी नस्ल या अपने वर्ग या आदमी जाति ही के हित का ध्यान छाया रहता है। दूसरों के हक और लाभ के लिए उनके पास वह हमदर्दो की नजर नहीं होती जो अपनों के लिए होती है। मुझे बताइए क्या इस अन्याय का कोई इलाज इसके सिवा सम्भव है कि सारे इन्सानों कानूनों को जल-मग्न कर दिया जाए और उस ईश्वर के कानून को हमसब स्वीकार कर लें, जिसकी नजर में एक इन्सान और दूसरे इन्सान के बीच कोई भेद नहीं। भेद अगर है तो केवल उसके आचार, उसके व्यवहार, और उनकें गुणों (डमतपजे) के पहलू से है न कि वंश या वर्ग या जाति के पहलू से ?

शांति किस प्रकार स्थापित हो सकती है

भाइयो! इस मामले का एक और पहलू भी है जिसे में अनदेखा नही कर सकता। आप जानते है कि इन्सान को काबू में रखने वाली चीज सिर्फ जिम्मेदारी का अहसास ही है। अगर किसी आदमी को यह यकीन हो जाए कि वह जो चाहे करे, कोई उससे पूछताछ करने वाला नही है और न उसके ऊपर कोई ऐसी ताकत है जो उसे सजा दे सके, तो आप समझ सकते है कि वह वेलगाम और निरंकुश बन जाएगा। यह बात जिस तरह एक व्यक्ति के वारे में ठीक है, उसी तरह एक कुटुम्ब, एक वर्ग, एक जाति और सारी दुनिया के इन्सानों के बारे में भी ठीक है। एक खानदान जब यह महसूस करता है कि उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता तो वह आपे से बाहर हो जाता है। एक वर्ग भी जब उत्तरदायित्व और जबावदेही से निडर होता है तो दूसरो पर अत्याचार करने में उसे कोई सकंोच नहीं होता। एक जाति या एक राज्य भी जब अपने आप को इतना शक्तिशाली पाता है कि अपने अत्याचार के किसी बुरे परिणाम का भय उसे नहीं होता, तो वह जंगल के भेड़िये के समान कमजोर बकरियों को फाड़ना और खाना शुरू कर देता है। दुनिया मे जितनी अशांति पायी जाती है, उसकी एक बड़ी वजह यही हैं। जब तक इन्सान अपने से ऊँची किसी सत्ता को स्वीकार न करें, और जब तक उसे विश्वास न हो कि मुझसें ऊपर कोई ऐसा है जिसकों मुझे अपने कामों का जबाव देना है और जिसके हाथ में इतनी शक्ति है कि मुझे सजा दे सकता है, उस समय तक यह किसी प्रकार संभव नही है कि अत्याचार का दरबाजा बंद हो और वास्तविक शांति स्थापित हो सके।

अब मुझें बताइये कि ऐसी शक्ति विश्व-विधाता ईश्वर के सिवा और कौन सी हो सकती है ? खुद इन्सानों में से तो ऐसा कोई नही हो सकता क्योंकि जिस इन्सान या जिस इन्सानी तबकें को भी आप यह हैसियत दंगे, खुद उनके निरंकुश और सर्कस हो जाने की संभावना है। खुद उससे आशंका है कि सब राक्षसों का एक राक्षस वह हो जाएगा और खुद उससे यह भय है कि स्वार्थ और पछपात से काम लेकर, वह कुछ इन्सानों को गिराएगा और कुछ को उठाएगा। यूरोप ने इस समस्या को हल करने के लिए "राश्ट्र-संध"(स्मंहनम व िदंजपवदे) बनाया था। किंतु वह बहुत जल्द सफेद रंग वाली जातियों का संध बनकर रह गया और उसने कुछ शक्तिशाली साम्राज्यों के हाथ में खिलौना बनकर निर्बल जातियों के साथ अन्याय आरंभ कर दिया। इस तजरबे के बाद इस बात में कोई शक वाकी नहीं रह सकता कि खुद इन्सान में से किसी ऐसी शक्ति का पैदा हो जाना अंसभव है, जिसकी जबावतलवी का भय एक-एक आदमी लेकर संसार की जातियां और साम्राज्यों तक को वश और काबू मे रख सकता हो। ऐसी शक्ति स्वभावतः मानवीय क्षेत्र से बाहर उसके ऊपर ही होनी चाहिए और वह केवल सम्पूर्ण जगत के स्वामी ईश्वर ही की शक्ति हो सकती है। हम यदि अपनी भलाई चाहते है तो हमारे लिए इसके सिवा कोई उपाय ही नहीं है कि ईश्वर पर विश्वास करें, उनकी सत्ता के आगे अपने आप को आज्ञाकारी प्रजा के समान सौंप दे, और इस विश्वास के साथ संसार मेे जीवन व्यतीत करें कि वह सम्राट हमारे छिपे और खुले सब कामों को जानता है और एक दिन हमें उसकी अदालत में अपनी पूरी जिन्दगी के कामों का हिसाब देना है। हमारे सज्जन, सभ्य और शांति-प्रिय इन्सान बनने का केवल यही एक उपाय है।

एक संदेह

अब में अपनी बात को समाप्त करने से पहले एक सन्देह को दूर कर देना जरूरी समझता हूँ जो सम्भवतः आप में से हर एक के दिल में पैदा हो रहा होगा। आप सोच रहे होंगे कि जब ईश्वर का साम्राज्य इतना शक्तिशाली है कि मिट्टी के एक कण से लेकर चन्द्रमा और सूर्य तक हर चीज उनकी काबू मे है, और जब इन्सान उनके साम्राज्य में केवल

एक प्रजा की हैसियत रखता है तो आखिर यह संभव कैसे हुआ कि इन्सान उसके साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करें और खुद अपनी बादशाही का ऐलान करके उसकी प्रजा पर अपना कानून चलाये ? क्यों नहीं ईश्वर उसका हाथ पकड़ ़लेता और क्यों उसको सजा नही देता ? इन प्रश्नों का उत्तर में सक्षिंप्त शब्दों में दूंगा।

बात यह है कि ईश्वर के साम्राज्य में मनुष्य की हैसियत लगभग ऐसी है जैसे एक बादशाह किसी आदमी को अपने राज्य के किसी जिले का अधिकारी न्युक्ति करके भेज देता है। राज्य बादशाह ही का होता है प्रजा भी उसकी होती है। रेल, टेलीफोन सेना और दूसरी सारी शक्तियां बादशाह ही के हाथ में रहती है, और बादशाह का शासन इस जिले पर चारो और से इस प्रकार छाया रहता है कि इस छोटे से जिले का अधिकारी इसकी तुलना में बिल्कुल विवश होता है। यदि बादशाह चाहे तो उसे पूरी तरह मजबूर कर सकता है कि उसकी आज्ञा से बाल बराबर मुंह न मोड़ सकें। किंतु बादशाही उस अधिकारी की बुद्धि की, उसकी पात्रता और उसकी योग्यता की परीक्षा लेना चाहता है, इसी लिए वह उस पर से अपनी पकड़ इतनी ढीली कर देता है कि उसे अपने ऊपर अपने से ऊँची कोई सत्ता महसूस नही होती। अब यदि वह अधिकारी अक्लमन्द, नकम हलाल, कत्तव्यनिष्ठ और वफादार है तो इस ढीली पकड़ के होते हुए भी वह अपने आप को प्रजा और नौकर ही समझता रहता है। बादषाह के राज्य में उसी के कानून के अनुसार हुकूमत करता है और जो अधिकार बादषाह ने उसे दिए है उन्हे ंखुद बादशाह की इच्छा के अनुसार उपयोग में लाता है। इसके विश्वसनीय आचार-व्यवहार से उसकी योग्यता साबित हो जाती है और बादशाह उसे अधिक ऊँचे पदो के योग्य पाकर उन्नतियों पर उन्नतियां देता चला जाता है। किंतु यदि वह अधिकारी वेवकूफ, नमकहराम और दुष्ट हों और प्रजा के वे लोग जो उस जिले में रहते है नासमझ और नादान हो, तो अपने ऊपर सत्ता की पकड़ ढ़ीली पाकर वह विद्रोह पर आमदा हो जाता है, उसके दिमाग में खुदमुख्तारी की हवा भर जाती है। वह खुद अपने आप को जिले का मालिक समझकर आजादी के साथ मनमानी शासन चलाने लगता है। और मूर्ख प्रजा के लोग केवल यह देखकर उसकी स्वतंत्रत सत्ता स्वीकार कर लेते है कि बेतन यह देता है, पुलिस इसके पास है, अदालतें इसके हाथ में है, जेल की हथकड़ियां और फाँसी के तख्ते इसके अधिकार में है, और हमारे भाग्य के बनाने या बिगाड़ने के अधिकार यह रखता है। बादशाह इस अंधी प्रजा और इस विद्रोही अफसर दोनो के आचार-व्यवहार को देखता रहता है। वह चाहे तो तुरंत पकड़ ले और ऐसी सजा दे कि होश ठिकाने न रहें। किंतु वह उन दोनों की पूरी परीक्षा लेना चाहता है, इसलिए वह बड़ी ही वर्दास्त और धैर्य के साथ उन्हें ठील देता चला जाता है, जिससे कि जितनी आयोग्याताएँ उनमें भारी हुई है, पूर्ण रूप से प्रकट हो जाएं। उसकी शक्ति इतनी प्रबल है कि उसे इस बात का कोई भय ही नहीं है कि यह अधिकारी कभी जोर पकड़कर उसका सिघांसन छीन लेगा। उसे इस बात की भी कोई आशंका नहीं कि ये विद्रोही और नमकहराम, लोग उसकी पकड़ से निकलकर कहीं भाग जाएंगें। इसलिए उसे जल्दवाजी के साथ फैसला कर लेने की कोई जरूरत नहीं। वह वर्षो बल्कि शताब्दियों तक ठील देता रहता है यहां तक की जब ये लोग अपनी पूरी दुष्टता प्रकट कर चुकते है और अपनी कसर उनके प्रकट होने में नहीं रहती तब यह एक दिन अपना प्रकोप उसपर भेजता है और वह ऐसा समय होता है कि कोई उपाय उस समय उन्हें उसके प्रकोप से नहीं बचा सकता।

सज्जनों! मेरी और आपकी और ईश्वर के बनाए हुुए इन अधिकारियों की इसी तरह आजमाइश हो रही है। हमारी अक्ल की, हमारी क्षमता और बर्दाश्त की, हमारी फर्जशनासी (कत्तव्यनिष्ठा) की हमारी वफादारी की कठिन परीक्षा हो रही है। अब हम में से हर इन्सान को खुद फैसला करना चाहिए कि वह अपने असली मालिक का नमकहलाल अधिकारी या प्रजा बनना पसंद करता है या नमक हराम। मैने अपने लिए नमक हलाली का फैसला कर लिया है और में हर उस इन्सान का विद्रोही हूँ जो ईश्वर का विद्रोही है। आप अपने फैसले में आजाद है चाहें यह रास्ता अपनाये या वह। एक और वे हानियां है और वे लाभ है जो ईश्वर के ये विद्रोही नौकर पहुँचा सकते है और दूसरी और वे हानियां और वे लाभ है जो ईश्वर स्वयं पहुँचा सकता है। दोनो में से जिसकों आप चुनना चाहें चुन सकते है।